[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3510

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गायन विभिन्न सांगितिक विद्याओं में नवाचार ध्रुवपद शैली मे नवाचार

आस्था त्रिपाठी
शोधार्थी /ध्रुवपद साधिका
इन्दौर, मध्य प्रदेश

भारत मे मुस्लिम सत्ता स्थापित होने के पहले एक ही संगीत पदधति प्रचार में थी । पूरे भारत वर्ष में प्रबन्धगान ही था, भारतीय सामाजिक जीवन, सांस्कृतिक पहचान दैनिक क्रियाकलाप आदि प्रबंधो के इर्द गिर्द ही बने रहे, प्रायःसभी लोकजीवन को अपने में आत्मसात कर लेने के कारण भारतीय संगीत ने बाहरी संस्कृतियो को भी अपना लिया तथा उनके लिये आकर्षण का केन्द्र भी बना रहा ।

जिस शैली ने सम्पूर्ण कला जगत को एक सांगितिक सौंदर्य, सांगितिक कल्पना, सांगितिक भाषा व आकर्षण में शताब्दियों तक बांधे रखा उसी देशी प्रबन्ध का बदला हुआ रूप ही ध्रुवपद है ।

ध्रुवपद गायकी के लिये बनाये गये नियम व उसका अनुशासन आज भी वही है । काल क्रमानुसार उसमें निरंतर परिवर्तन होते रहे है किंतु मूल अनुशासन में कोई परिवर्तन नही आया है ।

ध्रुवपद शैली मे नवाचार क्या हो सकता है और क्या–क्या परिवर्तन ध्रुवपद शैली मे हुये है। वह सविस्तर प्रस्तुत कर रही हूँ ।

1) ध्रुवपद गायन के लिए जो जटिलता की मुहर लगी है, उस पूर्वाग्रह से बाहर आना ।
2) महाविद्यालयीन तथा विश्वविद्यालयीन पाठय्क्रम में ध्रुवपद की शिक्षा में दुगुन, चौगुन, आड, कुआड तक सीमित न रखा जाये । आज जितनी भी सांगितिक विधाये हम सुनते है उन सभी का आधार ध्रुवपद ही है । शिक्षण में ध्रुवपद को एक अलग विधा के रूप में विदयार्थियो को चुनने का मौका दिया जाये ।
3) आज मियाँ तानसेन के नाम से समारोह होते है परन्तू उनमे ध्रुवपद के गायन की एक या दो प्रस्तुतियाँ ही होती हैं, संगीत सम्राट तानसेन जो संगीत के अमुल्य धरोहर है वे ध्रुवपद के ही कलावंत थे ।
4) विदयार्थियो को ध्रुवपद सीखने व सुनने की प्रेरणा दी जाये , ध्रुवपद की गायकी व ध्रुवपद की बानीयो के बारे में बताये जाये, किस घराने की क्या विशेशता है ।
5) अनावश्यक ध्रुवपद शैली को जोरदार व मर्दानी गायकी कहकर रसिक जनो से दूर कर देना, वर्तमान समय में ध्रुवपद गायन में महिलाओ का स्थान भी अग्रणी है, जिनमें मुधभटट् तैलंग, सोमबाला साखले आदि है, मैं स्वयंम पद्मश्री गुन्देचा बन्धुओ से डागरवाणी परंम्परा में ध्रुवपद की विधिवत तालीम ले रही हूँ ।

हॉलाकि आज से 50 वर्ष पूर्व और आज ध्रुवपद गायन की स्थिती में बहुत अंतर आया है, आज उस्ताद नसीर, अमीनुद्दीन और नसीर मोईनुद्दीन (सिनीयर डागर) ज्युनियर डागर, जिया मोईनुद्दीन डागर, जिया फरिदुद्दीन डागर, उ. रहीम फहीमुद्दीन डागर, उ. सईदुद्दीन डागर, पद्मश्री गुन्देचा बंन्धु, डॉ ऋत्वीक सान्याल, पं. उदय भवालकर आदि ध्रुवपद साधको के द्वारा जो ध्रुवपद का पुनःउद्धार हुआ है वह संगीत जगत के लिये अमुल्य धरोहर है ।

सीनीयर डागर बन्धु द्वारा जो कार्य हुआ ,उसमें मुख्यतः गले की ध्वनी का जो गुण है उसके अनुसार आवाज को संचालित करना तथा सुर की सुक्ष्मता पर प्रमुख कार्य किया ।

उ. जिया मोईनुद्दीन डागर, जिया फरीदुद्दीन डागर इन्होने पुरे भारतवर्ष को कई प्रतिष्ठित कलाकार दिये जैसे उ.बहाउद्दीन डागर, पदम्श्री गुन्देचा बंन्धू, डॉ. ऋत्विक सान्याल, उदय भवालकर,निर्माल्य डे, पुष्पराज कोष्टी आदि है ।

इन्होने ही घरानो की सीमाओ से निकल कर ध्रुवपद केन्द्र भोपाल (गुरूकुल) संचालित करके उसमें सभी को स्वतंत्र रूप से परम्परागत शिक्षा दी । उनके द्वारा प्रशिक्षित ध्रुवपद साधक आज विश्वभर मे ध्रुवपद का नाम व कई शिष्य तैयार कर रहे है । इन दोनो भाइयो ने भारत की इस प्राचीन परम्परा के संरक्षण व संवर्धन में अभूतपूर्व योगदान दिया ।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पद्मश्री गुन्देचा बन्धु ने ध्वनि के उपर कार्य किया जिसमें उनका गायकी पक्ष तो है हि साथ–साथ उन्होने पखावज से उत्पन्न होने वाले स्वरो को अपनी गायन शैली में सामजस्य के साथ स्थापित किया, उन्होने पखावज के शुध्द ठेके को भी अपनी गायन शैली में स्थान दिया , पखावज जैसा वादय जो की लडन्त भिडन्त के लिये ही जाना जाता था उन्होने उससे उत्पन्न होने वाली मधुर ध्वनि को समझा और उसके भावनात्मक रूप को अपने गायन में स्थान दिया , इसका मतलब यह नही है की वे लयकारी नही करते, वे लयकारी को सामंजस्य के साथ उपज अंग में प्रस्तुत करते है ।

उन्होने मध्यकालीन कवि तथा आधुनिककालीन कवियो के पदो को ध्रुवपद में संगीतबदध किया है, जैसा

1) आई खेली होरी – कवि पद्माकर
2) रन जीतीराम रऊ आये – गोस्वामी तुलसीदास
3) मैं नीर भरी दुख की बदली – महादेवी वर्मा
4) झीनी–झीनी बीनी चदरिया – कबीरदास

कई ऐसे पद है जिनको ध्रुवपद शैली में उन्होने गाया । ध्रुवपद के प्रचार –प्रसार के लिये उन्होने मुख्य रूप से कई भारतीय तथा विदेशी विद्यार्थियो को निःशुल्क ध्रुवपद तथा पखावज की शिक्षा गुरू–शिष्य परम्परा में दी तथा दे रहे है, उन्होने आवासीय ध्रुवपद संस्थान (गुरूकुल) की स्थापना की है, जिसमें विद्यार्थी वही रहकर ध्रुवपद की साधना करते है । जो ध्रुवपद के भविष्य के लिए ध्रुवपद के अतीत को देखते हुये बहुत ही महान कार्य है, आज ध्रुवपद इन सभी विद्वानो, साधको, कलाकारो, कलावंन्तो के कारण फिर से उसी रूप में आ रहा है । ध्रुवपद के नवाचार के माध्यम से जन–जन तक ध्रुवपद शैली पहुँचे यही ईश्वर से प्रार्थना है ।

संदर्भ –

1 ध्रुवपद और उसका विकास – आचार्य कैलाशचंद्र देव बृहस्पति
2 ध्रुवपद समीक्षा – डॉ. भरत व्यास